BAL BHARATI PUBLIC SCHOOL, PITAMPURA,
DELHI – 110034

कक्षा दसवीं

प्रिय विद्यार्थियों ,

निर्देश -

*पाठ के निम्न बिंदुओं को ध्यान से पढ़ेंगे |

*लिंक को ध्यान से सुनें।

*शब्दार्थ अपनी नोटबुक में लिखेंगे।

* प्रश्नों के उत्तर अपनी नोटबुक में लिखेंगे।

https://youtu.be/Tyd-wJ8ZFLc
https://youtu.be/Tyd-wJ8ZFLchttp://ncertbooks.prashanthellina.com/class_10.Hindi.Sparsh/k-2.pdf

पद - मीरा (मुख्य बिंदु)

* प्रस्तुत पाठ में मीरा अपने आराध्य कृष्ण को संबोधित करती है।

* पाठ में मीरा अपने आराध्य श्रीकृष्ण से प्रार्थना करती हैं, उनसे अनन्य प्रेम एवं भक्ति का इज़हार करती हैं।

*मीरा के आराध्य श्रीकृष्ण कहीं निर्मोही परदेशी जोगी के रूप में, कहीं साकार गोपी वल्लभ श्रीकृष्ण के रूप में तो कहीं निराकार ब्रह्म के रूप में पाठ में निरूपित हैं।

* मीरा श्रीकृष्ण की क्षमताओं तथा रूप सौंदर्य का सरस वर्णन करते हुए उनका स्मरण करती हैं तथा उनका गुणगान करते-करते उनके कर्तव्य का भी ध्यान दिलाती हैं।

BBPS PITAM PURA

Scanned with CamScanner

*भक्तिकाल की प्रसिद्ध कवयित्री मीराबाई ने अपने पदों में अपने आराध्य देव श्रीकृष्ण के प्रति अपनी भक्ति, आस्था और श्रद्धा प्रकट की है। वे उन्हें अपना संरक्षक मानती हैं।
प्रथम पद (अर्थ)

पहले पद में वे अपने प्रभु श्रीकृष्ण से जन-जन की पीड़ा हरने की विनती करती हैं। वे द्रौपदी भक्त प्रह्लाद, गजराज तथा कुंजर का उदाहरण देकर कृष्ण को अपने कर्तव्य का स्मरण कराती है कि हे गिरिधर! आप मेरी पीड़ा का हरण कीजिए। मुझे सांसारिक बंधनों से छुटकारा दिलवाइए। इस प्रकार मीरा अपने आराध्य की क्षमताओं का गुणगान करते हुए उनका स्मरण करती है।
द्वितीय पद(अर्थ)
दूसरे पद में मीरा अपने आराध्य का सामीप्य पाने के लिए उनकी चाकरी करने की इच्छा प्रकट करती है। वे श्रीकृष्ण के सभी काम करने को तत्पर हैं। प्रातः उठकर उनके दर्शन करना चाहती हैं। वे वृंदावन की कुंज गलियों में कृष्ण लीला का गुणगान करना चाहती हैं। उनके रूप सौंदर्य का वर्णन करते हुए यमुना के किनारे दर्शन देने का भी अनुरोध करती है। श्री कृष्ण के सिर पर मोर पंख युक्त मुकुट सुशोभित है ,गले में वैजयंती माला है , मन मोहिनी मुरली बजाते हैं। मीरा ऊंचे -ऊंचे महल बनाकर उसमें खिड़कियाँ बनवाना चाहती हैं ताकि उन्हें श्री कृष्ण के दर्शन प्राप्त हो सकें। लाल रंग की साड़ी पहनकर सामने प्रभु के दर्शन पाने की इच्छा व्यक्त करती हैं। वे श्रीकृष्ण से प्रार्थना करती है कि, 'हे प्रभु तुम आधी रात के समय मुझे यमुना जी किनारे के दर्शन देने के लिए आना। मीरा , इन पदों में कभी अपने आराध्य से मनुहार करती हैं तो कभी मौका मिलने पर शिकायत करने से भी नहीं चूकती हैं। इस प्रकार मीरा का संपूर्ण व्यक्तित्व कृष्ण से जुड़ा हुआ है। इनकी भक्ति दैन्य और माधुर्य भाव की है। इन पदों में मीरा का श्री कृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम दृष्टिगोचर होता है।

BBPS PITAM PURA

निम्न प्रश्नों के उत्तर अपनी नोटबुक में लिखिए -

प्रश्न 1 मीरा बाई ने 'हरि' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है ?

प्रश्न 2 मीरा बाई विभिन्न भक्तों के उदाहरण से क्या कहना चाहती हैं ?

प्रश्न 3 मीरा बाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं ?

Scanned with CamScanner

प्रश्न 4 द्वितीय पद के अनुसार कृष्ण स्वरूप का वर्णन करें ?

प्रश्न 5 अपने इष्ट के लिए मीरा बाई क्या -क्या करने के लिए तैयार हैं ?

प्रश्न 6 मीरा बाई महलों में बारी क्यों लगवाना चाहती हैं ?

प्रश्न 7 मीरा बाई के पद किस भाषा में लिखें हैं ?

प्रश्न 8 चाकरी करने से मीरा बाई के मन की कौन सी तीन बातें पूरी हो जाएँगी ?

BBPS PITAM PURA

Scanned with CamScanner